दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

□ वर्ष 64 □ अंक-14 □ दिल्ली □ अप्रैल (द्वितीय) □ मूल्य : 2 रु.

दिल्ली विश्वविद्यालय के दयाल सिंह कालेज में भारतीय भाषा समिति के तत्वावधान में 24 अप्रैल 2026 को श्री गुरु रविदास जी पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था–बेगमपुरा सहर को नाऊं। भारतीय दलित साहिय अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे। इस संगोष्ठी में डा. सुमनाक्षर ने 'की–नोट' के रूप में अपना आलेख–गुरु रविदास जी का बेगमपुरा लोकतांत्रिक राष्ट्र' प्रस्तुत किया जो काफी सराहा गया।

गुरु रविदास जी का बेगमपुरा लोकतांत्रिक राष्ट्र–विशेष लेख

• डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

संत शिरोमणि गुरु रविवास जी का जन्म आज से 650 वर्ष पूर्व पंडित, पांडे, ब्राह्मणों के गढ़ काशी (वाराणसी) में एक चर्मकार के घर माघ पूर्णिमा को रविवार के दिन हुआ था। इस विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है–

चौदह सौ तैंतीस की
माघ सुदी पंदरास।
दुनियों के कल्याण हित,
प्रगटे श्री रविदास।।

यह वह समय था जब समाज में छुआछूत, जात–पांत, भेदभाव, ऊंच–नीच, अंधविश्वास चरम सीमा पर था। शूद्र जाति के लोगों को तो जानवरों से भी नीचे मानकर ब्राह्मणवादी लोग उनके साथ दुराचार, अत्याचार, बलात्कार और बर्बरता बरतते हुए उन्हें समता के सभी मानवीय अधिकारों से वंचित किया हुआ था।

भगवत भजन का एकाधिकार ब्राह्मणों का था, और ब्राह्मण को मनु व्यवस्था के अनुसार वर्ण व्यवस्था में सर्वोच्च मानकर सत्ता के शिखर पर बैठे राजा–महाराजा धर्मान्धता के कारण उन्हें पूरा सम्मान देते हुए उनके हर गलत कार्य को भी सही मानते हुए उन्हें पूरा सम्मान देते थे। समाज में अछूतों की तरह महिलाओं को भी बराबर सम्मान प्राप्त नहीं था। उन्हें भी पैरो की जूती मानते हुए उनके साथ खुला दुर्व्यवहार किया जाता था। पति की मृत्यु के साथ उसे भी सती होने के लिए बाध्य किया जाता था।

ऐसे मध्यकालीन भारत में संत शिरोमणि गुरु रविदास ने जन्म लेकर सामाजिक असंतुलन को संतुलित किया, अशांत हृदयों को अपनी वाणी से शांत किया, निराश मनों को आशा की नई किरण दिखाई, अंधविश्वास एवं भ्रमों का प्रमाणित तर्कों से पर्दाफांस किया। धर्म के नाम पर हो रहे अत्याचारों को खत्म करके पूजा का नया सिद्धांत प्रस्तुत किया, ऊंच–नीच की दीवारों को गिराकर सभी को एकता का पाठ पढ़ाया और भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित किया।

गुरु रविदास जी ने ब्राह्मणों के गढ़ काशी में वर्ण व्यवस्था का विरोध डंके की चोट करते हुए खुले शब्दों में कहा–

जात–पांत पूछे न कोई,
हरि को भेजे सो हरि का होई।

उन्होंने मन की शुद्धता पर जोर देते हुए कहा–

जिसका मन चंगा,
उसकी खटोटी में गंगा।

गुरु जी ने जात–पांत पर चोट करते हुए कहा–

जात–जात में जात है
ज्यों केलन में पात।
'रविदास' न मानुष जुड़ सकै,
जौ लौं जात न जात।।

उन्होंने मनुष्य के गुणों को महत्ता देते हुए कहा–

रविदास ब्राह्मण ना पूजिये,
जऊ होवे गुनहीन।
पूजिहि चरन चंडाल के,
जऊ होवै गुन परवीन।।

गुरु रविदास जी ने देवी–देवता, मूर्तिपूजा, पूजा–पाठ, धार्मिक आडम्बर का पर्दाफांस करते हुए कहा कि मन ही मंदिर है जहां से सच्ची सुख शांति प्राप्त हो सकती है–

मन ही पूजा, मन ही धूप।
मन ही सेवू सहज सरूप।।

गुरु रविदास जी ने परमात्मा प्राप्ति के लिए बाहरी कर्मकांडों व पूजा पाठों का खंडन करते हुए कहा कि सच्चे मन से प्रभु को समर्पित कर सच्ची पूजा कर सकते हैं–

जब हम होते तब तू नाही,
अब तूही मैं नाही।
जऊ हम बांधे मोह पास,
हम प्रेम बधनि तुम बांधे।।

(शेष भाग... पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय

बुध पूर्णिमा के अवसर पर विशेष लेख

राष्ट्र की मूल शक्ति–बुद्ध के लोग

*** डा. सोहनपाल सुमनाक्षर**

14 अप्रैल, 1998 को भारतरत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर के जन्मदिवस पर नई दिल्ली के ताल कटोरा, स्टेडियम में महात्मा ज्योतिबा फुले सैनी मैमोरियल ट्रस्ट की ओर से अखिल भारतीय सम्मेलन हुआ जिसमें पूरे देश से सैनी, शाक्य, मौर्य, कुशवाहा समाज के लोगों ने भाग लिया। सम्मेलन में सभी वक्ताओं ने कहा कि हम महात्मा बुद्ध, महात्मा ज्योतिबा फुले को मानने वाले हैं और इनके अनुयायी हैं। हमें इनके मार्ग पर चलकर ब्राह्मणवाद को खत्म कर देश की सत्ता और सम्पदा पर कब्जा करना होगा।

24 सितम्बर 1998 को 'पूना पैक्ट दिवस' पर भारतीय दलित साहित्य अकादमी का 14वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित किया गया जिसमें देश–विदेश के 10 हजार से ऊपर दलित साहित्यकार, लेखक, पत्रकार, समाज सेवकों ने भाग लिया। सम्मेलन में सभी बुद्धिजीवी दलित प्रतिनिधियों का कहना था कि 'पूना पैक्ट' के नाम पर दलितों के साथ धोखा हुआ है। 'कम्युनल अवार्ड' से उन्हें जो अधिकार मिलने वाले थे उनकी कुछ क्षतिपूर्ति दलितों को मिले 'आरक्षण' से हो सकती थी, पर अब तक ब्राह्मणवादियों ने 'आरक्षण नीति' पर ईमानदारी से अमल नहीं किया है। वे उल्टे धीरे–धीरे 'आरक्षण' को खत्म करने और दलितों को सदैव के लिए गुलाम बनाये रखने की साजिश कर रहे हैं। ऐसे में हमें महात्मा बुद्ध, महात्मा ज्योतिबा फुले और बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने अपने अधिकार पाने और अपनी स्थिति सुधारने का जो मार्ग दिखाया था, उसे अपनाना चाहिये।

देश के दलित लोग 30 फीसदी हैं जो किसी भी तरह 'हिन्दू' नहीं हैं, क्योंकि सवर्ण हिन्दू की तरह उन्हें समाज में बराबरी के अधिकार नहीं हैं। दलित अछूत हैं। उनके न तो नाई बाल काटता है, ही उनके ब्याह–शादी में शामिल होता है, इसी तरह ब्राह्मण न उसका कोई संस्कार करता है और न ही उनके किसी काम में शरीक होता है, क्षत्री या वैश्य तो उन्हें अपने दास व गुलाम से ज्यादा कुछ भी मानने के लिए तैयार नहीं, वे न अच्छा खा सकते हैं न अच्छा पहन सकते हैं और न ही अच्छी तरह घर बनाकर रह सकते हैं। अछूत दलितों के रीति–रिवाज भी सवर्णो से अलग हैं, खान–पान–पहनावा भी। फिर उनकी बस्तियां ही उनका समाज हैं जहां उनमें से ही उनके नाई, पंच चौधरी और संस्कार कराने वाला पंडित होता है। इस तरह हिन्दू समाज से उन्हें कुछ लेना–देना नहीं। हिन्दुओं ने तो अपनी संख्या बढ़ाने के लिए उन्हें अपने साथ झूठमूठ जोड़ रखा है और इस तरह 15 फीसदी तथाकथित हिंदुओं ने देश की 95 फीसदी सत्ता और सम्पदा पर कब्जा किया हुआ है। दलित व अछूतों को तो वे किसी

(शेष भाग... पृष्ठ 5 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

पृष्ठ 1 का शेष...गुरु रविदास जी का बेगमपुरा लोकतांत्रिक राष्ट्र–विशेष लेख

अपने छुटन को जतनु करहु,
हम छुटे तुम आराधे।।

गुरु रविदास जी ने कट्टरपंथी पंडित–पांडे और मुल्ला मौलवियों पर भी सीधा प्रहार करते हुए कहा–

मंदिर से कोई घिन नहीं,
मस्जिद सो ना प्यार।
दोनों में राम–रहिम नहीं,
कह रविदास चमार।।

गुरु जी ने धर्मांतरण पर सीधी चोट करते हुए कहा–

हरि सा हीरा छांडिके,
करे अन की आस।
ते नर दोजख जायेंगे,
सत भाखै रविदास।।

गुरु जी का कहना था कि बड़े पुण्य कर्मों के बाद यह दुर्लभ मनुष्य जीवन मिला है। इसे व्यर्थ में विकारों में फंसाकर व्यर्थ गंवाने की जगह प्रभु स्मरण में लगाना चाहिए–

दुलभ जनमु पुनः फल पाइओ,
बिरथा जात अविवेकै।
राजे इन्द्र समसरि ग्रिह आसन,
बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै।।

गुरु रविदास जी ने अपनी सच्ची अटूट, विलक्षण भक्ति से ब्राह्मणों के गढ़ काशी (वाराणसी) में उन पंडों– पुजारियों को परास्त किया जिन्होंने उनकी आध्यात्मिक भक्ति को ललकारा था। गुरु जी से परास्त होकर उन ब्राह्मणों को शर्त के अनुसार गुरु रविदास जी को डोली में बैठाकर अपने कंधों पर उठाकर सारी काशी नगरी में घुमाना पड़ा।

गुरु रविदास जी की भक्ति भाव से प्रभावित होकर कितने ही राजा–महाराजा और महारानियां उनकी शिष्य/शिष्या बन गये। इनमें चित्तौड़ की महारानी झालीबाई और उसकी पुत्र वधु महारानी मीराबाई प्रमुख हैं। गुरुजी ने इस तरह अपनी आत्मशक्ति और सच्ची भगवान भक्ति के आधार पर झोंपड़ियों की पगडंडियों को राजमहलों से जोड़ा। भगवान बुद्ध के बाद यह दूसरी सामाजिक क्रांति थी जिसने मनुस्मृति, ब्राह्मणवाद, वर्ण व्यवस्था को नकार कर मानव समता का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी भक्ति में रमी महारानी मीराबाई तो खुले रूप से गाती फिरती थीं–

मीरा ने गाविंद मिल्या जी,
गुरु मिल्या रैदास।।
रैदास संत मिले मोहिं सत्गुरु,
दीन्ही सुरत सहदानी।
मेरो मन लागो गुरु सों,
अब न रहूंगी अटकी।
गुरु मिलिया रैदास जी
दीन्ही ज्ञान की गुटकी।।

इसलिए आचार्य रजनीश अपनी पुस्तक **तुम्हीं पूजा, तुम्हीं धूप** में कहते हैं कि जो व्यक्ति एक महारानी के मन में बसता हो, वह कोई छोटा–मोटा व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विलक्षण महान व्यक्ति था, रैदास भारत के आकाश के ध्रुवतारा थे।

गुरु रविदास जी अपनी आध्यात्मिक शक्ति व भक्ति की सुगन्धि विश्व में छोड़ते हुए 151 वर्ष की लम्बी आयु में सवंत 1584 में चित्तौड़गढ़ में ब्रह्मलीन हुए, जहां महारानी मीराबाई के निमंत्रण पर वे वहां गये थे। उनकी स्मृति में वहां स्थापित छतरी उनके चरणों की छाप के साथ विराजमान है।

गुरु जी चहुंमुखी विद्या के धनी थे। उन्होंने अपने लोगों के अंदर स्वाभिमान जगाते हुए कहा –

पराधीनता पाप है
जानु लेहू मेरे मीत।
रविदास दास पराधीन से,
कौन करे है प्रीत।।
पराधीन का दीन क्या,
पराधीन बेदीन।
रविदास दास पराधीन को,
सभी ही समझे हीन।।

गुरु जी ने कहा कि हमें मधुमक्खिओं की तरह मिलकर रहना चाहिए और अपने साथ हो रहे अन्याय व शोषण का विरोध करते हुए अपने मानवीय एकता के अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने कहा–

सत संगति मिली रहिये माधव,
जैसे मधुम मखीरा।

उन्होंने शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि शिक्षा के बिना विवेक रूपी दीया मलीन हो जाता है, इसलिए शिक्षित होना जरूरी है–

माधो अबदिया हितकीन
विवेक दीप मलीन।

बेगमपुरा लोकतांत्रिक राष्ट्र

गुरु रविदास जी ने सच्चे लोकतांत्रिक राज्य की इन शब्दों में अपनी इच्छा की प्रगट की–

ऐसा चाहुं राज मैं,
जहां मिलै सभन को अन्न।
छोट बडे सब सम बसैं,
रविदास रहें प्रसन्न।।

गुरु जी ने 'स्वराज' को सर्वोत्तम बताते हुए कहा–

रविदास मानुष बसन कूं
सुखकर हैं दुई ठांव।
एक है 'स्वराज्य' में,
दूजा मरघट गांव।।

गुरु रविदास जी ने सच्चे समतावादी, मानवतावादी और सम्पन्नता व सुख शान्ति से भरपूर बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना अपनी प्रसिद्ध साखी बेगमपुरा शहर में की थी–

'बेगमपुरा शहर को नाऊ।
दुखु अंदोहु नहीं तिहि ठाउ।।
ना तसवीस खिराजु न मालु।
खउफु न खता न तरसु जमालु।।
अब मोहि खूब वतन गह पाई।
वहाँ खैर सदा मेरे भाई।।
कायम दायम सदा पातसाही।
दोम न सेम एक सो आही।
आबोदाना सदा मसहूर।
वहाँ घनी बसहि मामूर।।
तिउ तिउ सैल करहि जीव भावै।
महरम महल न को अटकावै।।
कह रविदास खलास चमारा।
जो हम सहरी सो मीत हमारा।।

इस बेगमपुरा शहर में न दुःख है, न चिंता, न कोई गम। यहां किसी को कोई डर–भय नहीं, क्योंकि यहां कोई किसी के आध ीन नही। यहां सदैव सुख और कल्याण है। यहां न तो किसी प्रकार का माल खरीदना पड़ता और न ही कोई टैक्स देना पड़ता है, यहां न कोई घाटा हो जाने का डर है। श्ह सुन्दर शहर एक बादशाहत के आध ीन सदैव आबाद रहता है और जलवायु के लिहाज से सर्वोत्तम है, यहां कहीं भी आने–जाने की कोई रूकावट नहीं है जो जहां चाहे सैर करता फिरता है। सब लोग यहां

रोटी, कपड़ा, मकान की समस्या से दूर भाईचारा व बराबरी के लिहाज से समान स्तर पर आनन्द के साथ रहते हैं।

गुरु रविदास जी के बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना को बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान में समाजवादी, समतावादी–समता, स्वतंत्रता, भाईचारा पर आधारित सबको शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, न्याय, धर्म व आस्था में स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिकार देकर पूरा किया है।

भारतीय संविधान गुरु रविदास जी के सपनों का दस्तावेज है जो देश के प्रत्येक नागरिक को समानता के अधिकार प्रदान करता है। गुरु जी की इस बेगमपुरा साखी के साथ उनके 40 पद महान पवित्र ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दिये गये हैं जो उनकी महानता और महत्ता को दर्शाती है।

गुरू रविदास जी के जीवन की कुछ चमत्कारी घटनायें

1. गंगा मैया के स्वयं प्रगट होकर गुरू जी के लिए सोने का कंगन देना।
2. अपनी चमड़े की खटोटी में गंगा का उत्पन्न करना–
   जिसका मन चंगा,
   उसकी खटोटी में गंगा।
3. गंगा में भगवान शालिगराम की मूर्ति तैराना।
4. बादशाह सिकन्दर लोधी द्वारा जेल में बंद करने के बावजूद जेल के बाहर खुले में विचरण करना–गुरू जी से प्रभावित होकर तुगलकाबाद किले (दिल्ली) के पास गुरू जी को मन्दिर बनाने के लिए भूमि देना।
5. चित्तौड़गढ़ किले में ब्राह्मणों द्वारा रविदास जी के साथ बैठकर भोजन करने से इन्कार करने पर सभी ब्राह्मण–पंडे पुजारियों को अपने बीच बैठे रविदास जी को देखना।
6. होशियारपुर (पंजाब) जिले के खुशहालगढ़ गांव में लोगों के अनुरोध पर पांव से चट्टान पत्थर हटाकर गंगा निकालना। आज भी वहां इसे 'चरणछू गंगा' के नाम से जल प्रवाहित है।
7. श्री गुरू रविदास जी ने 'लंगर' प्रथा का प्रारम्भ किया सब एक साथ 'लंगर' छक कर अपनी भूख मिटा सकें, सभी गुरूद्वारों और रविदास मन्दिरों ने लंगर प्रथा को अपनाया है।
8. गुरूमुखी लिपि (पंजाबी भाषा) के आविष्कृता गुरू रविदास जी को ही माना जाता है।
9. चित्तौड़गढ़ की महारानी झालीबाई और उनकी पुत्रवधु महारानी मीराबाई को गुरू रविदास जी ने दीक्षा देकर स्त्री पुरुष की असमानता को मिटाने का रास्ता प्रशस्त किया।
10. गुरू रविदास जी अपने पिताजी का दाह संस्कार बनारस के दशमेश घाट पर कराना चाहते थे पर वहां पंडे–पुजारियों ने अडंगा डाल दिया कि तुम अछूत चमार हो। तुम्हारे बाप का दाह संस्कार यहां नहीं हो सकता क्योंकि यह घाट केवल सवर्णों के लिए है। तुम यहां से नीचे जाकर अस्सी घाट पर अपने पिताजी का दाह संस्कार वहां जाकर करा लो क्योंकि गंगा हमारे घाट से नीचे की ओर बहती है। गुरू रविदास जी ने बिना कोई वाद–विवाद किये अस्सी घाट पर अपने पिताजी का दाह–संस्कार करने लगे। काशी के लोगों ने देखाा कि अब गंगा ने भी अपना रास्ता बदल लिया और वह नीचे से ऊपर की तरफ बहने लगी। पंडे–पुजारी इस पर बहुत शर्मिंदा हुए और उन्होंने गुरू रविदास जी के चरणों में गिरकर क्षमा मांगी।
11. सन् 1498 में गुरू रविदास जी गुरू नानक देव जी से मिलने करतारपुर (पंजाब) गये जहां उनका गर्मजोशी से सत्कार करते हुए गुरू रविदास जी को गले मिलते हुए बड़े आदर के साथ कहा–वाहे गुरूजी, आप जैसा संत इस दुनिया में दूसरा नहीं है।

नानक जी सोचे मन माहि।
ऐसा सन्त जगत में नाही।।
पूरण ज्ञानी सन्त रविदासा।
आत्म ज्ञान ह्रदय में प्रकाशा।।

सिख धर्म में इन दोनों की ज्ञान गोष्ठी का बड़े आदर के साथ सुना जाता है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब का संकलनकर्ता श्री गुरू अर्जुन देव ने भी गुरू जी की महिमा में कहा कि गुरू रविदास ठाकुर बन आया।

सद्गुरू रविदास जी की महानता से प्रभावित होकर सद्गुरू कबीर ने उनकी प्रशंसा में कहा है–

साधुन में रैदास सन्त हैं,
सुपाच ऋषि सो मानिया।
हिन्दू तुर्क दोह दीन बने हैं,
कछु नहीं पहचानिया।।

गुरू रविदास जी की आध्यात्मिक एवं सामाजिक महत्व को देखते हुए उनकी वाणी के 40 पद श्री गुरू ग्रंथ साहब में सम्मिलित किये गए हैं, जो उनकी महानता को दर्शाते हैं। इन पदों में श्री गुरू रविदास द्वारा रचित आरती भी बहुत प्रसिद्ध है जिसका गायन देश–विदेश के सभी गुरूद्वारों में शाम–सवेरे बड़े भक्ति भाव से किया जाता है। वह प्रसिद्ध आरती इस प्रकार हैं–

नाम तेरो आरती मजन मुरारे।
हरि के नाम बिना जूठे सगल पसारे।।
नाम तेरो आसनो नाम तेरो उरसा।
नाम तेरो केसर ले छिटका रे।
नाम तेरो अंभुला नाम तेरो चन्दनो।
घसि जपे नाम ले तुझहि को उचारे।।
नाम तेरो दीवा नाम तेरो बाती।
नाम तेरो तेल ले माहि पसारे।।
नाम तेरे की जोति लगाई।
भयो उजियारो भुवन सगला रे।।
नाम तेरो तागा नाम फूल माला।
भार अठारह सगल जुठारे।
तेरा किया तुझहि कउ अरपण।
नाम तेरा तू ही चँवर डोला रे।।
दसअठा अठसठे चारे खानि।
यहि बरतणि है सगल संसारे।।
कह रविदास नाम तेरो आरती।
सतनाम है हरि भोग तुहारे।।

श्री गुरू रविदास जी की महानता से सभी साधु सन्त, सामाजिक कार्यकर्ता तथा राजा–महाराजा को प्रभावित हुए

सम्पादकीय का शेष...राष्ट्र की मूल शक्ति–बुद्ध के लोग

हैं। उनकी महानता से कवि, लेखक और साहित्यकार, कलाकार भी प्रभावित हुए हैं। महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने गुरू रविदास जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित होकर जो कविता लिखी है वह आपके सम्मुख गुरू रविदास जी के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है–

ज्ञान के आकर, मुनीश्वर परम
धर्म के ध्वज, हुए उनमें अन्यतम,
पूज्य अग्रज, भक्त कवियों के प्रखर
कल्पना की किरण नीरज पर सुघर
पड़ी, ज्यों अंगडाइयाँ लेकर खड़ी–
हो गई कविता, आई शुभ घड़ी–
जाति की, देखा सभी ने मींचकर
दृग, तुम्हें श्रद्धा सलिल से सींचकर।
रानियाँ अवरोध की घेरी हुई
वाणियाँ ज्यों बनी जब, चेरी हुई।
छुआ पारस भी नहीं तुमने, रहे–
कर्म के अभ्यास में, अविरत बहे
ज्ञान गंगा में समुज्ज्वल चर्मकार,
चरण छूकर कर रहा मैं नमस्कार।

ऐसे महान बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना करने वाले, सर्वप्रथम 'स्वराज्य' की प्रेरणा देने वाले और अपनी आध्यात्मिक भक्ति की शक्ति से मन में ही सच्चे परमात्मा का मन्दिर स्थापित करने वाले गुरुओं के भी गुरु श्री रविदास महाराज को हार्दिक नमन।•

सत्ता और सम्पदा के अधिकारी ही नहीं समझते।

देश में शोषित व पिछड़े लोग 55 फीसदी हैं जो कहने को तो हिन्दू हैं पर सवर्ण हिन्दुओं की तरह उन्हें भी पूरे अधिकार नहीं हैं। दलितों की तरह वे देश की भी कृषि–सम्पदा की बढ़ोतरी और वर्णों की तिमारदारी और जी–हजूरी करने के लिए हैं। दलित तो यज्ञोपवीत संस्कार से विहीन हैं ही तभी तो गुरूकुल व विद्यालयों में उनके शिक्षा ग्रहण करने पर पाबन्दी है।

शोषित–पिछड़े भी 'यज्ञोपवीत संस्कार' से विहीन हैं। इसलिए गुरूकुल और शिक्षण संस्थाओं पर उनके लिए भी पाबन्दी है क्योंकि द्विजों का ही 'यज्ञोपवीत' संस्कार किया जाता है, वे ही शिक्षा ग्रहण करने और वेदादि का अध्ययन करने के अधिकारी हैं।

इस तरह दलित अछूतों और शोषित पिछड़ों की स्थिति द्विजों यानि सवर्ण हिन्दुओं की दृष्टि में एक समान है। सिर्फ इन दोनों में इतना अन्तर कर रखा है कि दलित अछूत सवर्ण की घर की देहरी (चौखट) तक जा सकता है और शोषित पिछड़े गुलामी व तिमारदारी के लिए उनके घर के अन्दर तक जा सकते हैं। उनकी सेवा के लिए दोनों ही गुलाम हैं और उनकी महिलायें – उनकी नजर में बन्दि ानी, बांदी, कामतृप्ति की गुड़िया और रखैल, जिन्हें जब चाहा वे इस्तेमाल कर सकते हैं। उनकी नजर में दलित, अछूत व शोषित पिछड़ों की इज्जत, मान, मर्यादा, कुछ भी नहीं हैं, क्योंकि अधिकांश सवर्ण द्विजों की मान्यता है कि 'वीर भोग्या वसुन्धरा' यानि वे ही वीर हैं, समर्थ हैं और समाज में सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम हैं, इसलिए धरती की सभी वस्तुओं का उपभोग करने का अधिकार उन्हीं को है। इसलिए द्विजों के अतिरिक्त शेष लोग (दलित व पिछड़े) की सम्पत्ति पर उपभोग करने का उनका पूरा अधिकार है।

ऐसी स्थिति में दलित अछूत व शोषित–पिछड़ों की हालत एक जैसी है। ये दोनों संस्कार विहीन, अधिकार विहीन, सम्पत्ति विहीन, सत्ता विहीन हैं। हिन्दुओं के वर्णव्यवस्था और ब्राह्मणवाद से ऊबकर दोनों ही बुद्ध की शरण में गये, बौद्ध बने, बुद्ध धर्म संघ में शामिल हुए। बौद्ध धर्म के ह्रास व विनाश के बाद दोनों को ही फिर से अत्याचार और अन्याय का शिकार होना पड़ा और आज भी आजादी के 76 साल बाद इन दोनों वर्गों की स्थिति सोचनीय है, भले ही दलित अपने को महादेव की संतान बताने का ढोंग रचकर अपना 'अहम्' ऊंचा रखने का नाटक करता हो या फिर हम कुशवाहा, लव–कुश की संतान या शाक्यमुनि महात्मा बुद्ध के अनुयायी मानकर ऊंचा होने का दम्भ भरते हों, पर दोनों की स्थिति आज भी अि कर विहीन है। इस तरह दलित अछूत तथा शोषित पिछड़े वर्ग दोनों निम्न आधार पर एक–समान हैं–

(1) ये दोनों वर्ग हिन्दू धर्म की वर्णव्यवस्था में चतुर्थ वर्ण में है।

(2) ये दोनों वर्ग अद्विज हैं, यज्ञोपवीत संस्कार विहीन हैं। इसलिए विद्या, सत्ता व सम्पदा विहीन हैं।

(3) इन दोनों को हिन्दू धर्म में सवर्णों (द्विजों) के समान बराबर के अधिकार नहीं हैं।

(4) ये दोनों वर्ग ही असमानता, अन्याय, अत्याचार, अनादर के शिकार है।

(5) ये दोनों वर्ग महात्मा बुद्ध, महात्मा ज्योतिबा फुले और डा. बी. आर. अम्बेडकर के अनुयायी हैं।

(6) ये दोनों वर्ग प्राचीन बौद्ध हैं और बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर धर्म संघ में शामिल थे।

(7) इन दोनों वर्गों के रीति–रिवाज और संस्कार एक समान हैं और एक दूसरे से मिलते–जुलते हैं।

(8) ये दोनों वर्ग सवर्णों की अपेक्षा एक दूसरे के काफी नजदीक है।

(9) ये दोनों ही इस देश के मूल निवासी, आदिवासी हैं।

इन उपरोक्त बातों से यह साबित है कि इस देश के दलित अछूत व शोषित पिछड़े एक ही वर्ग के लोग हैं और ब्राह्मणवाद ने उनके बीच ऊंच–नीच की भावना और श्रेणी खड़ी की हुई है।

इन दोनों वर्गों का खून एक है, धर्म एक है, आस्था एक है, धार्मिक गुरू एक है, सामाजिक नेता एक हैं, मार्गदर्शक एक हैं। इसलिए देश की राजनैतिक व सामाजिक व्यवस्था का पूरी तरह बदलने के लिए उन्हें एक जुट हो जाना चाहिये तभी वे छिने हुये अधिकार–सत्ता व सम्पदा पर पुनः काबिज हो सकेंगे। •

बाबा साहब डा. अम्बेडकर के जन्म दिवस पर विशेष लेख

अम्बेडकर का जीवन ही उनका संदेश

प्रो. (डा.) श्यौराज सिंह 'बेचैन'
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय

महापुरुषों के क्रियाकलाप ही उनका संदेश होते हैं। यही कारण हैं कि लोग दुनिया के सभी शीर्ष नायकों के जीवन–वृत्तों में गहरी दिलचस्पी दर्शाते हैं। डा. भीमराव अम्बेडकर के जीवन संघर्ष के प्रति भी दुनिया में जिज्ञासुओं की संख्या बढ़ रही है। आज उनकी प्रासंगिकता पर विचार करें तो एक प्रचलित लोक कहावत याद आती है–

'काम सबको प्यारा होता है, चाम किसी को नहीं।'

इसमें दो मत नहीं कि अम्बेडकर भारत भूमि के महा कमेरे सपूत थे। उन्होंने जबसे होश संभाला, उत्तरोत्तर स्वयं को बौद्धिक श्रम की साधना में झोंकते चले गए। बड़ा विजन, बड़े सपने और फिर उनको हासिल करने के लिए सामर्थ्यवान बनने की निरंतर तत्परता की उनकी जैसी दूसरी मिसाल नहीं है। कबीरपंथी पिता सूबेदार रामजी ने उन्हें पहला पाठ पढ़ाया कि यदि तुम्हें अस्पृश्य जातियों को सामाजिक गुलामी से मुक्ति दिलानी है तो ज्ञान की सत्ता से स्वयं को समर्थ बनाना होगा। ज्ञान से ही ज्ञान का जवाब दिया जा सकता है। सो पिता की मंशा समझ आई और पढ़ाई को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया, पर पढ़ाई के मार्ग में अस्पृश्यता और जाति हिकारत कदम–कदम पर अवरोध खड़े कर रही थीं। ऐसे परिवेश में दसवीं पास कर लेने पर उनका सम्मान किया गया। वे अस्पृश्य समुदाय के दसवीं पास पहले विद्यार्थी थे।

शिक्षा–उपाधियों के उनके कीर्तिमान अध्ययन की निरंतरता के ही परिणाम हैं। अन्यथा स्नातक का उनका परीक्षाफल एक औसत छात्र की छवि ही सामने लाता है। अपनी पैदायशी सुपरमैन वाली धारणा को उन्होंने अपने साक्षात्कारों में स्वयं ही तोड़ा। 13 अप्रैल, 1947 को 'साप्ताहिक नवयुग' में अपने साक्षात्कार में उन्होंने बताया था कि मेरी बीए में थोड़े ही अंकों से सेकेंड डिवीजन रह गई। इंटरमीडिएट में कुल 600 में 223 अंक ही आए थे। इस बाबत उन्होंने कहा था कि अगर कोई मेरे बीए तक के परीक्षा परिणाम देख कर भविष्यवाणी करता कि यह लड़का आगे चल कर इतनी उपलब्धियां प्राप्त करेगा तो उसे पागल करार दिया जाता। फिर भी उनके अध्ययन और लेखन का चुनाव, रिसर्च की गुणवत्ता और देश समाज के संदर्भ में उसकी उपयोगिता महत्वपूर्ण है। उनके शोध के निष्कर्षों की रोशनी में ही भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना हुई। अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार पाने वाले अमर्त्य सेन ने भी गरीबी को समझने के लिए डा. अम्बेडकर के रिसर्च को श्रेय दिया था।

राष्ट्रीय एकता को लेकर डा. अम्बेडकर न केवल चिंतित रहते थे, बल्कि उन्होंने पंथ के आधार पर भारत विभाजन रोकने की सलाह भी दी थी। 'थाट्स आन पाकिस्तान' पुस्तक लिखकर उन्होंने दोनों पक्षों को समझाया भी था। जिन्ना को समझाया था कि एकता से हल निकालें, बंटवारा करा कर पछताएंगे। जिन्ना ने उन्हें अनसुना करते हुए कहा, 'मैं आपकी किताब पढ़ चुका हूं. डा. अम्बेडकर यह आपकी राय है, हमारा फैसला नहीं है।' बाबा साहब दूरद्रष्टा थे। उन्होंने तभी बता दिया था कि विभाजन से स्थायी शांति और प्रगति स्थापित नहीं होगी। आधे मुसलमान भारत और आधे पाकिस्तान में, इससे समाधान नहीं होगा, परंतु उनकी किसी ने नहीं सुनी।

भारत–पाकिस्तान संबंधों को लेकर डा. अम्बेडकर की शंकाएं सही साबित हुईं। आज भी दोनों में प्रेम, सहयोग, शांति और सद्भाव नहीं है। पाकिस्तान पोषित आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत को भारी धन–बल खर्च करने पड़ रहे हैं। पाकिस्तान भी जब तब हथियार भाँजता रहता है। यदि दोनों देश अविभाजित होते तो युद्ध सामग्री पर खर्च होने वाली मोटी धनराशि देश के आर्थिक, बौद्धिक और सामाजिक विकास पर खर्च होती है।

अछूतों को आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से समर्थ बनाने के उद्देश्य से डा. अम्बेडकर गोलमेज सम्मेलन से पृथक निर्वाचन का अधिकार लेकर आए। इस पर गांधी जी ने कहा, ::अस्पृश्य मेरे दिल के टुकड़े हैं। मैं उन्हें अलग नहीं होने दूंगा।'' तत्कालीन मीडिया ने भी पृथक निर्वाचन को ऐसे पेश किया जैसे पाकिस्तान की तरह डा. अम्बेडकर कोई अलग दलितस्थान बनाने जा रहे हों। गांधी जी ने पूना की यरवदा जेल में आमरण अनशन कर दिया। डा. अम्बेडकर पर चारों और से दबाव डाला गया कि बापू के प्राण बचाओ। वे धर्म संकट में थे। गांधीजी के प्राणों की रक्षा करें या अस्पृश्यों के हितों–अधिकारों की रक्षा? आखिर राजनीतिक सत्ता, प्रशासनिक एवं राजकीय सेवाओं में निर्धारित प्रतिनिधित्व के आधार पर पूना पैक्ट हो गया। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि समझौते पर नेक नीयत से अमल नहीं हुआ। दस वर्ष के भीतर प्रतिनिधित्व पूरा होने का आश्वासन आज तक पूरा नहीं हुआ। उच्च शिक्षा, न्यायपालिका, मेडिकल, इंजीनियरिंग एवं प्रशासनिक उच्च स्तर पर प्रतिनिधित्व पूरा होना तो दूर, उपस्थिति तक नगण्य बनी हुई है।

भारत में जातिभेद की तरह अमेरिका में नस्लभेद की समस्या थी। उसमें समावेशी नीतियों को लागू करके अश्वेतों को उद्योग, मीडिया, कला, सिनेमा, राजनीति, खेल, संगीत सब क्षेत्रों में समावेश कर लिया। भारत के आधुनिक सेवा क्षेत्र में दलितों का उचित समावेश नहीं है। नतीजा उन्हें देश को अमेरिका बनाने का अवसर नहीं मिल रहा है। बेशक हम विकासशील हैं, परंतु संतुलन और समग्रता में उसे विकसित बनाने वाले नागरिकों को मौके देने से राष्ट्रीय निर्माण में तेजी आएगी।•

हिमायती
7 / अप्रैल (द्वितीय) 2026 (कुल पृष्ठ 8)
प्रकाशन तिथि : 30 अप्रैल, 2026
आर. एन. आई. नं. 40611/62
RNI No. 40611/62

हिन्दू त्यौहार देश की प्रगति में बाधक

सरदार ज्ञान सिंह

भारत के सभी बुद्धिजीवियों, लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों, नेताओं और जनता से और सरकार से अपील है कि त्यौहारों के नाम पर जो विनाशकारी पागलपन अपनाकर बरबादी की जाती है उसे रोकें और उस धन और जन शक्ति को देश के विकास में लगायें। त्योहारों पर जो अच्छा खाना बनाकर खाते हैं और जो अच्छे नये कपड़े बनाकर पहनते हैं, यह बरबादी नहीं है। त्योहारों पर जो पटाखे आतिशबाजी के रूप में रुपयों को जलाया जाता है, और होली पर एक दूसरे पर रंग रोगन डालकर कपड़ों को बरबाद किया जाता है, यह धन और जनशक्ति की बरबादी है। जैसा कि अभी होली का त्यौहार आ रहा है। इस होली के त्यौहार पर लगभग 130 अरब रुपये बरबाद कर दिए जाते हैं, जिसका ब्योरा संक्षेप में यह है–

1. होली– होली जलाने के नाम पर पूरे देश में लगभग 12 अरब रुपयों की 55 लाख टन से ज्यादा लकड़ी प्रति वर्ष एक दिन में फूंक दी जाती है। इससे प्रदूषण 12 गुणा और ज्यादा बढ़ जाता है जो भारी हानिकारक है। होली फूंकने के बाद अगले दिन सवेरे से ही लोग एक दूसरे पर रंग–रोगन डालते और गुलाल मलते हैं।

उत्तर प्रदेश के ग्रामों में यह काम हफ्तों पहले से और हफ्तों बाद तक चलता है। केवल इतना ही नहीं, राह चलने वाले यात्रियों पर ग्रामों में गोबर व गन्दा कीचड़ व ढेले भी फैंके जाते हैं। इससे कई जगह खूनी संघर्ष भी हो जाता है। मुसलमान और ईसाई भाइयों को छोड़कर बाकी सब 80 करोड़ लोग होली खेलते हैं। बड़ी संख्या में लोग शराब पीकर हुडदंग मचाते, गाली गलौच करते और झगड़ा तक कर देते हैं। कुछ लोग शराब के नशे की बेहोशी में गन्दी नालियों में भी गिरते पड़ते हैं। होली खेलने वाला प्रत्येक व्यक्ति स्त्री–पुरुष, बालक व वृद्ध औसतन 15 रुपये रंग में बरबाद करता है। यानी 80 ×15 = 1200 करोड़ (12 अरब) रुपये रंग में बरबाद कर दिए जाते हैं। इसके अलावा प्रत्येक व्यक्ति का एक जोड़ी कपड़ा भी खराब हो जाता है। एक जोड़ी कपड़े की कीमत कम से कम 100 रुपये मानें तो 80 करोड़ × 100=80 अरब रुपयों के कपड़े होली पर बरबाद कर दिये जाते हैं। इसके अलावा पूरे देश में लगभग 26 अरब रुपयों की शराब भी होली पर लोग पी जाते हैं। यानी 12 अरब रुपये की लकड़ी, 12 अरब रुपये का रंग 80 अरब रुपये कपड़े 26 अरब रुपये की शराब = 130 अरब रुपये प्रतिवर्ष होली पर बरबाद कर दिए जाते हैं। यह बरबादी रोकी जा सकती है।

2. दीपावली:–दीपावली के त्यौहार पर भी देश में लगभग 135 अरब रुपये पटाखे आदि के रूप में जला दिए जाते हैं। 28 अक्टूबर 1997 को उत्तर प्रदेश लखनऊ टी. वी. से बताया गया कि उत्तर प्रदेश में दीवाली पर दो सौ करोड़ से ज्यादा के पटाखे प्रतिवर्ष बिक जाते हैं। परन्तु इस वर्ष बहुत ज्यादा पटाखे साढ़े तीन करोड़ के बिके हैं। यह सरकारी आंकड़े तो वह है जो सेल टैक्स के द्वारा सरकार को मिलते हैं। लेकिन जो बिकी सेल टैक्स के द्वारा होती है, उससे कई गुणा ज्यादा बिकी बिना सेल टैक्स के होती है। यानी लगभग 6 सौ करोड़ रुपयों के पटाखे उत्तर प्रदेश में दीपावली पर प्रतिवर्ष फूंक दिए जाते हैं। अब अकेले उत्तर प्रदेश का यह हाल है तो पूरे देश में तो 125 करोड़ यानी (125 अरब) रुपयों के पटाखे दीवाली पर प्रतिवर्ष फूंक दिए जाते हैं। इन पटाखों के जलने से जो धुंआ और गैस निकलती है, उससे प्रदूषण में 12 गुणा ज्यादा वृद्धि और हो जाती है। फिर इन पटाखों के फटने से जो भयानक शोर होता है, इसका बहुत ज्यादा बुरा असर नवजात बच्चों पर बूढ़े और बीमार लोगों पर होता है। यानी ध्वनि प्रदूषण भी मानव को हानि पहुंचाता है। फिर पटाखों के फटने से कई जगह आग भी लग जाती है। इससे भी लगभग 5 अरब रुपयों की हानि हो जाती है। इसके अलावा दीवाली पर लोग, दीवे, मोमबत्ती और बिजली की लड़ियां भी जलाते हैं। इसमें भी लगभग 5 अरब रुपये बरबाद हो जाते हैं। इसके अलावा आतिशबाजी से कई लोग जख्मी हो जाते हैं।

अक्टूबर 1987 में मैंने अपनी आंख के मोतिया बिन्द का आपरेशन दिल्ली गुरू नानक आई अस्पताल में कराया था। तब 10 व 12 वर्ष की उम्र के 8 बालक इलाज के लिए आए थे, उनकी आंखें आतिशबाजी के तीर लगने से जख्मी हो गई थी। प्रत्येक बालक का पूरा परिवार दुखी था कि उनके बालक की आंख में रोशनी लौटेगी कि नहीं। नहीं मालूम कि इलाज पर कितना–कितना खर्च उनका हुआ होगा। अन्य आई अस्पतालों में भी ऐसे कई दुर्घटना के शिकार बालक गये होंगे। इन सब परेशानियों के अलावा 135 अरब रुपये प्रतिवर्ष दीवाली पर बरबाद कर दिये जाते हैं।

3. दशहरा : ऐसी ही बरबादी दशहरे के त्यौहार पर की जाती है। दशहरे पर रावण और उसके परिवार के लोगों के बड़े ऊंचे–ऊंचे विशाल पुतले बांस की फच्चर और कागजों के बनाकर उनमें विस्फोटक भरकर आग लगा कर फूंक दिये जाते हैं। इस दशहरे पर भी पूरे देश में लगभग 15 अरब रुपये पुतले व आतिशबाजी के रूप में फूंक दिये जाते हैं। होली, दीवाली और

पृष्ठ 7 का शेष भाग.....हिन्दू त्यौहार देश की प्रगति में बाधक

दशहरे इन तीनों त्यौहारों पर देश व जनता की धन सम्पत्ति को आग लगाकर जो फूंका जाता है उसका संक्षेप में ब्यौरा यह है –

1. होली पर फूंकी गई धन सम्पत्ति = 130 अरब रुपये।

2. दीवाली पर फूंकी गई धन सम्पत्ति = 135 अरब रुपये।

3. दशहरे पर फूंकी गई धन सम्पत्ति = 15 अरब रुपये।

कुल = 280 अरब रुपये।

त्यौहारों की आड़ में यह 280 अरब रुपयों को प्रति वर्ष फूंकना बरबाद करना ब्राह्मण आर्यो की पूर्व से चली आ रही एक साजिश का अंग है, भारत देश की जनता को गरीब और भूखा नंगा रखने के लिए। अब जरा मानवीय और न्यायिक दृष्टिकोण से सोचो। सरकारी आंकड़ों के अनुसार भी देश में 40 प्रतिशत लोग, यानी देश में 40 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचा जीवन जी रहे हैं, और 20 करोड़ लोग भारत में ऐसे हैं जिन्हें एक समय भी भर पेट खाना नहीं मिलता। खाने के अभाव में पेट की भूख मिटाने के लिए कुछ भी खाने को मजबूर हैं। सर्दी से बचने के लिए उनके पास पूरे कपड़े भी नहीं हैं और ना रहने के लिए मकान है। वे ऐसी गन्दी जगहों पर रहने को मजबूर हैं, जहां पशु भी नहीं रहना चाहते। कुपोषण और गन्दी जगहों पर रहने से यह भांति–भांति की बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। फिर बिना इलाज, बिना दवाई के अकाल ही मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। केवल इतना ही नहीं, सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत देश में 14 करोड़ ऐसे बाल मजदूर भी हैं। जिनका बचपन उनसे छीन लिया गया है। उनकी उम्र खेलने और स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने की है, गरीबी व भूख के कारण वे कठिन और गन्दे काम करने को विवश है। केवल इतना ही नहीं, भारत देश पर विदेशी कर्जा भी बहुत है, जिसका ब्याज ही करोड़ों रुपये देश की जनता का पेट काट कर दिया जाता है। उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर जरा गम्भीरता से सोचो कि जिस देश (भारत) की ऐसी भयानक बुरी हालत है वहां त्यौहारों के नाम पर ऐसे 280 अरब रुपयों को फूंकना, बरबाद करना क्या गर्व की बात है? नहीं यह गर्व की बात नहीं बल्कि भारी और अपराध को रोको, और इस धन को और जन शक्ति को देश की प्रगति व विकास में लगाओ।

यह भी सर्वविदित है कि देश में बिजली की भारी कमी है। इसलिए कोई भी उद्योग पूरी क्षमता से उत्पादन नहीं कर पा रहा है। घरों में भी कई–कई घन्टे बिजली नहीं आती। इससे विद्यार्थियों की शिक्षा में बड़ा विघ्न पड़ता है। और अन्य कई परेशानी भी बिजली की कमी के कारण होती है। यह 280 अरब रुपये प्रति वर्ष बचाकर इन्हें बिजली की कमी दूर करने पर लगाए जाएं तो देश के सब उद्योग क्षमता पूर्ण उत्पादन करेंगे। इसके अलावा अन्य कई और नए उद्योग खुलेंगे। इससे लोगों को रोजगार मिलेगा, तो देश से बेकारी, गरीबी, भुखमरी मिटेगी, देश की धन सम्पत्ति बढ़ेगी, देश का विकास होगा, तो देश खुशहाल होगा। अब जरा गम्भीरता से सोचकर देखो कि त्योहारों के नाम पर देश की धन सम्पत्ति को जलाना – बरबाद करना अच्छा है? या उस बरबाद करने व जलाने वाली धन सम्पत्ति को देश के विकास में लगाना ज्यादा अच्छा है? अतः मैं सभी भारतीयों से अपील करता हूं कि देश में की जाने वाली इस बरबादी को रोकें, और देश के विकास में सब अपना योगदान दें, और त्योहारों को ऐसे ढंग से मनाएं कि देश और जनता को लाभ हो। आर्यों ने भारत में आकर कुटिल चालाकी और छल–बल से अपना राज्य कायम किया, और भारतीयों को शूद्र नाम देकर उन्हें अपना गुलाम बनाए रखने व भूखा मारने की कुटिल चाल चली। यज्ञों का प्रचलन किया। यजुर्वेद में यज्ञों का विधान है। इसमें एक दिन से लेकर 12 वर्ष व 14 वर्ष तक लगातार चलने वाले यज्ञों के बारे में लिखा है। इन यज्ञों में बड़े पैमाने पर अन्न धन को अग्नि कुण्डों में जलाकर नष्ट किया जाता था। बलि के नाम पर यज्ञों में निर्दोष प्राणियों की हत्याएं की जाती थी। यज्ञों में यूप स्थापित करने की बात आती है, यह यूप लकड़ी का यह थम्ब होता है। जिससे बांध कर प्राणियों की हत्याएं की जाती थी। अधर्यू उस ब्राह्मण को कहते हैं, जो यज्ञ में कसाई का काम, प्राणियों की हत्याएं करता था। नरमेघ यज्ञ में मनुष्य की बलि (हत्या) और अश्वमेघ यज्ञ में घोड़े के बलि (हत्या) की जाती थी। यज्ञ के प्रमुख 16 फंक्शन होते हैं, और न उन सबका अलग–अलग प्रमुख ब्राह्मण होता है, फिर उसके सहायक उपसहायक मिलकर कई सौ ब्राह्मण यज्ञ करते थे। और बड़ी बेरहमी से अन्न–धन को बड़ी तादाद में यज्ञ के अग्नि कुण्डों में जला कर नष्ट करते थे। उपरोक्त बातों को सर्व सामान्य को बड़ी गम्भीरता से सोचकर गलत परम्परा को त्याग देना चाहिए। •

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र
पढ़ें और आगे बढ़ें।

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A–9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली–33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली–9 से प्रकाशित। □ सह सम्पादक एवं व्यवस्थापक – जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**
नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।
सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–110009